अजगर बिलों में सेही के साथ शान्ति से रहते हैं

एक वैज्ञानिक उत्सुकता

अदिति मुखर्जी

अदिति मुखर्जी यहाँ अजगर तथा सेही, जिनके बीच अक्सर एक शिकारी और शिकार का सम्बन्ध होता है, के एक ही बिल में शान्ति से साथ-साथ रहने के अपने अध्ययन के बारे में बता रही हैं।

मैं ऐसे जन्तुओं का अध्ययन करती हूँ, जो अपना घर ज़मीन के नीचे बनाते हैं। मेरा अध्ययन करने का स्थान भरतपुर स्थित केवलादेव राष्ट्रीय पक्षी उद्यान है, जहाँ मैंने 2013 में कलगीदार सेही (crested porcupine) अर्थात् *Hystrix indica* पर शोधकार्य शुरू किया था। ट्रेप-कैमरा तथा उनके बिलों में घुस सकने योग्य वीडियो कैमरे की सहायता से हमने यह जानने की कोशिश की कि सेही किस तरह अपना घर बनाती हैं।

अजगर-सेही के बीच आपसी बँटवारा

सेही बहुत ही रोचक एवं विशिष्ट निर्माणकर्ता हैं और बिलों का एक अत्यन्त पेचीदा तंत्र बनाती हैं जिसमें कक्ष सुरंगों के माध्यम से आपस में



यह चित्र इंटरनेट से साभार।

चित्र-1: *सेही अपने बिल में आराम करते हुए।*

जुड़े रहते हैं। वे अपना घर हम इन्सानों की तरह ही बनाती हैं - कल्पना कीजिए कि बैठक-कक्ष और शयनकक्ष भूमिगत गलियारों से आपस में जुड़े हुए हैं। ये सुरंगें काफी संकरी होती हैं। हमारा कैमरा लगभग 11 मीटर की गहराई तक जा पाया परन्तु सुरंगें इससे भी अधिक लम्बी होती हैं जिनकी औसत ऊँचाई 10 से 50 सेंटीमीटर और चौड़ाई 20 से 50 सेंटीमीटर होती है। कक्ष सुरंगों से दुगने आकार के होते हैं। सेही के बिलों की विस्तृत आन्तरिक संरचना एक विस्मयकारी खोज थी परन्तु आगे और भी आश्चर्यजनक बातें हमारी प्रतीक्षा कर रही थीं।

खोज करते हुए हमें पता चला कि भारतीय चट्टानी अजगर (Indian rock python) अर्थात् *Python molurus* भी रहने के लिए उन घरों का इस्तेमाल कर रहे थे। यह वास्तव में आश्चर्य में डालने वाली बात थी क्योंकि सेही और अजगर के बीच शिकार और शिकारी का सम्बन्ध है। लेकिन दोनों प्रजातियों ने एक वैज्ञानिक तरीके से उस स्थान का आपस में बँटवारा कर लिया था – सेही अलग कक्षों में रहती हैं और तभी बाहर निकलती हैं जब अजगर महाशय अपने कक्ष में आराम फर्मा रहे होते हैं। अजगर भी अपनी घर वापसी से पहले, बाहर से ही पेट -पूजा करके आते हैं। इनके अतिरिक्त जीव-जन्तुओं की कुछ अन्य प्रजातियों जैसे पत्ती जैसी नाक वाली चमगादड़ों के रहने की जगह भी इन बिलों के कक्ष ही हैं। वैसे तो अजगर चमगादड़ों का भी शिकार करते हैं परन्तु ये अलग-अलग कक्षों में रहते हैं। एक साथ रहने के बावजूद शिकार और शिकारी का एक-दूसरे से न मिल पाना, वास्तव में आश्चर्यजनक था।

सुनहरे रंग के गीदड़ों ने भी उन बिलों में अपने लिए ठिकाना ढूँढ़ने की कोशिश की थी लेकिन अजगर और गीदड़ों के बीच मुठभेड़ हो गई थी। जगह पर कब्ज़े की इस लड़ाई में गीदड़, अजगर तथा सेही, दोनों को मारने की कोशिश भी करते हैं। अजगर और सेही आपसी शान्ति से रहते हैं और शायद इस प्रकार एक-दूसरे से सुरक्षा की भावना भी पाते हैं। ये दोनों जीव स्थान का परस्पर बँटवारा, काफी बुद्धिमानी से करते हैं। उदाहरण के तौर पर सेही अपने कक्ष में जाने के बाद, उसका प्रवेशद्वार इस तरह बन्द कर लेती है जिस प्रकार हम अपने कक्ष का दरवाज़ा बन्द कर लेते हैं। हालाँकि, अजगर का आकार बड़ा होता है, फिर भी उन्हें अपने बिल में बहुत कम जगह चाहिए होती है। चूँकि उन्हें खुद को गर्म रखने के लिए सिर्फ कुण्डली मारकर रहने की ज़रूरत होती है, इसलिए उनके कक्ष आकार में छोटे होते हैं।

भरतपुर एक अर्धशुष्क इलाका है और वहाँ का तापमान 0.5 डिग्री से



चित्र-2: सुनहरे रंग के गीदड़ भी सेही के बिल में अपने लिए ठिकाना ढूँढ़ने की कोशिश करते हैं और कब्ज़े की इस लड़ाई में गीदड़, अजगर तथा सेही, दोनों को मारने की कोशिश भी करते हैं।

50 डिग्री सेंटीग्रेड तक रहता है। गर्मी के दिनों में मैं अपना मैदानी कार्य सुबह 3.30 बजे शुरू कर देती हूँ। 10 बजे तक अपना काम पूरा करके, एकत्रित सूचनाओं का विश्लेषण करने के लिए अपने फील्ड स्टेशन पर आ जाती हूँ। सर्दी के मौसम के ठण्डे दिनों में मैदानी कार्य करना आसान होता है। चूँकि मैं जानवरों की विभिन्न प्रजातियों का अध्ययन करती हूँ, मेरा समय उनकी आदतों के अनुसार व्यवस्थित होता है। उदाहरण के लिए, अजगर सुबह 8 बजे के आसपास अपने बिलों से निकलते हैं और मैं शाम तक उनका पीछा करके, उनका अध्ययन करती हूँ।

अजगर का व्यवहार

मुझसे अक्सर पूछा जाता है कि अजगरों के इतने पास जाने में क्या मुझे डर नहीं लगता। मेरा उत्तर एकदम साफ होता है - नहीं। मैं हमेशा से इन जीवों के बारे में जानने के लिए उत्सुक रही हूँ। बचपन में मैंने *जंगल बुक* किताब पढ़ी थी और 'का' नाम के अजगर में मेरी रुचि जागी। यद्यपि इनके बारे में काफी नकारात्मक बातें की जाती हैं लेकिन मैं इस जीव से काफी मंत्रमुग्ध रही हूँ। बाद में, मैंने अजगरों का वैज्ञानिक अध्ययन किया और विज्ञान उत्सुकता जगाता है, डर नहीं।

मैंने पाया है कि ये जीव शर्मीले होते हैं और इंडियन रॉक पायथन बहुत शान्त होते हैं। अजगर जब अपने बिलों से बाहर निकलकर धूपस्नान के लिए आते हैं तो हम उनके क्रिया-कलापों का अध्ययन करते हैं। हालाँकि, ऐसा करते समय हम उनके धूपस्नान में कोई व्यवधान



चित्र-3: अच्छे स्वास्थ्य, सही शारीरिक विकास आदि के लिए, इंडियन रॉक पायथन को बिना किसी व्यवधान के धूप सेंकना ज़रूरी होता है।

नहीं डालते। उनके स्वास्थ्य, शारीरिक विकास, रेंगने की गति, पाचन और प्रजनन क्रियाओं को बनाए रखने के लिए, उनका धूपस्नान करना आवश्यक होता है। इसीलिए सभी शीतरुधिर प्राणी धूपस्नान करते हैं। अध्ययन के दौरान हमने पाया कि भरतपुर में पर्यटकों के आने-जाने और उनके शोरगुल से अजगरों के धूपस्नान में काफी व्यवधान होता है। इस प्रकार हमारे अध्ययन से वन विभाग को पर्यटकों की आवाजाही पर ज़रूरी रोक लगाने में भी मदद मिली।

आम धारणा के विपरीत, अजगर आक्रामक जन्तु नहीं होते। ये बहुत ही संवेदनशील और एकान्तप्रेमी होते हैं – वे 150 मीटर दूर से ही हमारी आहट सुन लेते हैं और छिपने की कोशिश करते हैं। उनको चौंकाने से बचने के लिए, मैं अपने ट्रेप-कैमरे के साथ ज़मीन पर घण्टों बैठी रहती हूँ और धीमे-धीमे रेंगकर ही चलती हूँ ताकि वे मुझसे डर न जाएँ। हालाँकि, जब वे मुझे रोज़ देखने लगे तो थोड़े निडर होकर आराम-से और चुपचाप सूरज की रोशनी में तब तक पड़े ऊँघते रहते थे जब तक कि उनका वापस जाने का समय नहीं हो जाता था।

जानवरों की इस संकटग्रत प्रजाति को भारत के 'वन्यजीव संरक्षण कानून' की प्रथम सूची में रखा गया है, अर्थात् ये अत्यन्त संरक्षित प्रजाति



चित्र-4: *आम धारणा के विपरीत, अजगर शर्मीले और शान्त जीव होते हैं। ये मनुष्य-गतिविधि के प्रति बहुत संवेदनशील होते हैं जो 150 मीटर दूर से ही आहट सुन लेते हैं और व्यवधानों का सामना करने की बजाय छिपना पसन्द करते हैं।*

है। इसके बावजूद अक्सर इन्हें मार दिया जाता है, या इनका शिकार करके पकड़ लिया जाता है। ये बाघ और हाथियों की तरह आकर्षक जीव नहीं हैं जिनके संरक्षण के लिए जन भावनाएँ उमड़ती हों। वास्तविकता में, लोग इनसे काफी डरते हैं और इन्हें बचाने से कतराते हैं। लोगों को यह समझाना सरीसृप विज्ञानियों के लिए अक्सर काफी कठिन होता है कि अजगरों के सामने खुद को बचाए रखने की कितनी बड़ी चुनौती है। परन्तु फिर भी वैज्ञानिक इस सम्बन्ध में जानकारी फैलाने और लोगों को सजग करने की पूरी कोशिश में जुटे हैं। मैंने जाना है कि ये प्राणी प्रकृति का वरदान हैं – उनके बारे में जानना और उनको बचाना, हमारे अपने जीवन की समृद्धि को बढ़ाता है।

अदिति मुखर्जी: प्रकृति संरक्षण वैज्ञानिक हैं और सालिम अली पक्षीविज्ञान एवं प्रकृतिविज्ञान केन्द्र में कार्यरत हैं।

अँग्रेज़ी से अनुवाद: कोकिल चौधरी: *संदर्भ* पत्रिका से सम्बद्ध हैं।

सभी फोटो: अदिति मुखर्जी

यह लेख *टाइम्स इवोक* पत्रिका से साभार।

अजगर से सम्बन्धित एक अन्य लेख ‘अजगर की शरीर-क्रिया की समझ के इन्सानी फायदे’ *संदर्भ*, अंक-130 (सितम्बर-अक्टूबर, 2020) में पढ़ा जा सकता है।